

भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड I

PART I—Section 1

प्राप्तिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 81]

No. 81]

नई दिल्ली, बुधवार, मार्च 5, 2008/फाल्गुन 15, 1929

NEW DELHI, WEDNESDAY, MARCH 5, 2008/PHALGUNA 15, 1929

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क नियमित्यालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 3 मार्च, 2008

अंतिम जांच परिणाम

(निर्णायक समीक्षा)

विषय : यूरोपीय संघ के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित सोडियम नाइट्राइट के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच (निर्णायक समीक्षा)।

सं. 15/6/2006-(एसएसआर) डीजीएडी.—1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) ने यूरोपीय संघ (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध देश/क्षेत्र कहा गया है) के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित सोडियम नाइट्राइट (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध वस्तु कहा गया है) के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की थी। प्राधिकारी के प्रारंभिक जांच परिणाम, अंतिम जांच परिणाम और संशोधन अधिसूचना, अधिसूचना सं. 54/1/2001-डीजीएडी द्वारा क्रमशः दिनांक 1-2-2002, 28-10-2002 और 24-3-2005 को प्रकाशित किए गए थे। जांच परिणामों और संशोधन के आधार पर संबद्ध देशों/क्षेत्र से आयातित संबद्ध वस्तु पर राजस्व विभाग द्वारा अनंतिम शुल्क, निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क और संशोधित निश्चयात्मक शुल्क क्रमशः उसकी अधिसूचना सं.

क. पुष्टभूमि

2. यतः 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) ने यूरोपीय संघ (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध देश/क्षेत्र कहा गया है) के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित सोडियम नाइट्राइट (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध वस्तु कहा गया है) के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की थी। प्राधिकारी के प्रारंभिक जांच परिणाम, अंतिम जांच परिणाम और संशोधन अधिसूचना, अधिसूचना सं. 54/1/2001-डीजीएडी द्वारा क्रमशः दिनांक 1-2-2002, 28-10-2002 और 24-3-2005 को प्रकाशित किए गए थे। जांच परिणामों और संशोधन के आधार पर संबद्ध देशों/क्षेत्र से आयातित संबद्ध वस्तु पर राजस्व विभाग द्वारा अनंतिम शुल्क, निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क और संशोधित निश्चयात्मक शुल्क क्रमशः उसकी अधिसूचना सं.

34/2002-सीमाशुल्क दिनांक 28.3.2002, 132/2002-सीमाशुल्क दिनांक 29.11.2002 और अधिसूचना सं. 51/2005-सीमाशुल्क दिनांक 27.5.2005 द्वारा लागू किए गए थे।

3. निर्दिष्ट प्राधिकारी को उक्त अधिनियम की धारा 9क(5) के अनुसार मै. दीपक नाइट्राइट लिमिटेड, पुणे और मै. पंजाब कैमिकल्स एंड क्राप्स प्रोटेक्शन लिमिटेड, चंडीगढ़ से एक साक्ष्य युक्त आवेदन प्राप्त हुआ था जिसमें संबद्ध वस्तु पर लागू पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा करने और इन आधारों पर इसे आगे और पार्च वर्षों के लिए जारी रखने का अनुरोध किया गया था कि संबद्ध देशों/क्षेत्र से संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बावजूद इनका पाटन जारी रहा था और संबद्ध देशों से पाटन के कारण घरेलू उद्योग को क्षति होना जारी है। यह भी दावा किया गया था कि पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को आवश्यक राहत पहुंचाने के लिए अपर्याप्त था और पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने से घरेलू उद्योग को हुई क्षति में और वृद्धि होगी। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने दिनांक 6.3.2007 को सार्वजनिक सूचना सं. 15/6/2006(एसएसआर)-डीजीएडी जारी की थी जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया था तथा जिसके द्वारा इस बात की जांच की गई थी कि क्या पाटनरोधी शुल्क की अवधि समाप्त होने पर पाटन, क्षति या ये दोनों जारी रहेंगे अथवा इनकी पुनरावृत्ति होगी।

ख. प्रक्रिया

4. इस जांच में नीचे वर्णित प्रक्रिया का पालन किया गया है:

- (i) समीक्षा के शुरूआत के बाद नियम 6(4) के अनुसार प्राधिकारी ने जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना के साथ संबद्ध देश/क्षेत्र के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली भेजी थी ताकि संगत सूचना प्राप्त हो सके।
- (ii) नियमों के अनुसार भारत में घरेलू उद्योग को भी संगत सूचना की मांग करने वाले नोटिस भेजे गए थे।
- (iii) नई दिल्ली स्थित यूरोपीय आयोग के शिष्टमंडल को नियम 6(2) के अनुसार जांच की शुरूआत के बारे में सूचित किया गया था और उनसे उनके देश के निर्यातकों/उत्पादकों से निर्धारित समयावधि के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने का आग्रह करने के लिए कहा गया था।
- (iv) भारत में संबद्ध वस्तु के ज्ञात आयातक और उपभोक्ताओं को प्रश्नावलियां भेजी गई थी जिनमें नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मांगी गई थी।
- (v) जांच अवधि और पूर्ववर्ती 3 वर्षों के लिए आयातों के सौदावार आंकड़ों की मांग वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से की गई थी और इस जांच में उन प्रत भरोसा किया गया है।
- (vi) जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना की प्रतियां व्यापक प्रसार के लिए फिक्की, सीआईआई और एसोचेम को भी भेजी गई थी।
- (vii) किसी भी निर्यातक/उत्पादक और आयातक ने प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है।
- (viii) मै. दीपक नाइट्राइट लि., वडोदरा और मै. पंजाब कैमिकल्स एंड क्रॉप प्रोटेक्शन लिमिटेड, चंडीगढ़ ने घरेलू उद्योग होने के नाते सूचना/आंकड़े प्रस्तुत किए हैं।
- (ix) प्राधिकारी ने उठाई गई क्षति की जांच करने, ईष्टतम उत्पादन लागत, भारत में संबद्ध वस्तु को बनाने और बेचने की लागत ज्ञात करने के लिए सामान्यतः स्वीकृत

लेखांकन सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर संभव सीमा तक घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना का सत्यापन किया है और ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा ।

- (x) प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के विचारों को मौखिक रूप से सुनने के लिए दिनांक 16 अक्टूबर, 2007 को एक सार्वजनिक सुनवाई आयोजित की थी जिसमें घरेलू उद्योग के प्रतिनिधि शामिल हुए थे । हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित अनुरोधों पर इन जांच परिणामों में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा विचार किया गया है ।
- (xi) प्राधिकारी ने नियम 6(7) के अनुसार सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत सभी साक्ष्यों के अगोपनीय अंश, अनुरोध करने पर निरीक्षण हेतु रखे गए थे ।
- (xii) जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना के उत्तर में और सार्वजनिक सुनवाई के बाद विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों पर संगत पैराग्राफों में नियमों के अनुसार उनके संगत होने और इस मामले से उनके संबंधित होने की सीमा तक चर्चा की गई है । हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तकाँ की जांच की गई है, उन पर विचार किया गया है और जहां उचित हो संगत पैराग्राफों में उन्हें दर्शाया गया है ।
- (xiii) जांच दिनांक 1 अक्टूबर, 2005 से 30 सितंबर, 2006 तक की जांच अवधि (पीओआई) में की गई थी तथापि, क्षति संबंधी विश्लेषण वर्ष 2003-04, 2004-05, 2005-06 और जांच अवधि के लिए किया गया है ।

ख.1 विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

5. मूल जांच में शामिल उत्पाद सभी रूपों में सोडियम नाइट्रोइट था । चूंकि यह निर्णायक समीक्षा है, इसलिए इस जांच में मूल जांच में शामिल उत्पाद शामिल है ।

6. सोडियम नाइट्रोइट एक ऑक्सीकरण एवं न्यूनकारी एजेंट है । यह एक सफेद क्रिस्टलाइन पाउडर है जिसका उपयोग अधिकांशतः पैरासिटामोल, एनलजीन, थियोफाइलीन, केफाइन, रंगाई उद्योग, लुब्रीकेंट्स, निर्माण रसायन, रबड ब्लोइंग एजेंट, टॉप अंतरण लवणों, मांस के प्रसंस्करण, वस्त्र आदि के उत्पादन हेतु भेषज उद्योग में किया जाता है ।

7. यह उत्पाद भारतीय व्यापार वर्गीकरण के अनुसार सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के सीमाशुल्क टैरिफ शीर्ष 28.34.10 के अंतर्गत वर्गीकृत है तथापि, यह सीमाशुल्क और आईटीसीएचएस वर्गीकरण केवल सांकेतिक हैं और वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं हैं ।

8. घरेलू उद्योग भी समान विशेषताओं और विर्भिदेशनों वाले सोडियम नाइट्रोइट का उत्पादन करता है । विचाराधीन उत्पाद अथवा समान वस्तु के मुद्दे पर किसी भी हितबद्ध पक्षकार द्वारा कोई तर्क नहीं दिए गए हैं और इसलिए प्राधिकारी मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित किया जा रहा उत्पाद और संबद्ध देश से विनिर्मित या निर्यातित उत्पाद पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) के अनुसार समान वस्तु है ।

ग. घरेलू उद्योग

9. मूल जांच में पाटनरोधी जांच हेतु आवेदन घरेलू उद्योग की ओर से मै. दीपक नाइट्राइट लि., वदोदरा द्वारा दायर किया गया था। वर्तमान निर्णायक समीक्षा में सूचना/आंकड़े मै. दीपक नाइट्राइट लिमिटेड, वदोदरा और मै. पंजाब कैमिकल्स और क्राप प्रोटेक्शन लिमिटेड, चंडीगढ़ द्वारा उपलब्ध कराए गए हैं।

ग.१ समीक्षा की शुरूआत तथा दिए गए तर्क

आवेदक घरेलू उद्योग के विचार

10. घरेलू उद्योग ने यह अनुरोध किया है कि सोडियम नाइट्राइट पर पाटनरोधी शुल्क के बावजूद यूरोपीय संघ से उत्पादकों/निर्यातकों ने भारतीय बाजार में संबद्ध वस्तु का पाटन जारी रखा है। वर्तमान जांच समीक्षा जांच है और इसमें निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा यह जांच करना अपेक्षित है कि क्या शुल्क हटाए जाने से पाटन के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है। इस मामले में चूंकि पाटित आयात जारी है इसलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा यह जांच करना अपेक्षित है कि क्या शुल्क हटाए जाने से उत्पाद का पाटन जारी रहने की संभावना है। संबद्ध देश से निर्यातक और उत्पादक पिछले अनेक वर्षों से भारत में संबद्ध उत्पाद का निर्यात कर रहे हैं। शुल्क के लागू होने के बाद भी भारी मात्रा में पाटित निर्यातों का जारी रहना यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि शुल्क हटाए जाने के बाद निर्यात मात्राओं में भारी वृद्धि हो जाएगी। यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि शुल्क हटाए जाने के बाद निर्यातों में कमी आएगी अथवा निर्यात कीमत में वृद्धि होगी।

प्राधिकारी द्वारा जांच

11. प्राधिकारी घरेलू उद्योग को जारी क्षति के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए तर्कों को नोट करते हैं। इन तर्कों पर घरेलू उद्योग को हुई क्षति, घरेलू उद्योग को पाटन एवं क्षति की पुनरावृत्ति की संभावना का विश्लेषण करने में विचार किया गया है।

घ. पाटन मार्जिन की गणना हेतु पद्धति

पाटन का निर्धारण: सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

घ.१ घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:-

12. याचिकाकर्ता ने अनुरोध किया कि यूरोपीय संघ में सामान्य मूल्य का अर्थ व्यापार के सामान्य प्रक्रिया में यूरोपीय संघ के घरेलू बाजार में सोडियम नाइट्राइट की कीमत है। उस कीमत के साक्षों को प्राप्त करने के प्रयास किए गए थे जिस पर यूरोपीय संघ के घरेलू बाजार में उत्पादकों/व्यापारियों द्वारा सामग्री बेची जा रही है। निर्यातकों/व्यापारियों की उस कीमत सूची की एक प्रतिलिपि प्राप्त करने के भी प्रयास किए गए थे जिससे व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में यूरोपीय संघ के घरेलू बाजार में सामान्य मूल्य के तर्कसंगत, पर्याप्त एवं बिल्कुल

सही साक्ष्य लिए जा सके । तथापि, याचिकाकर्ता यूरोपीय संघ में सामान्य मूल्य का कोई साक्ष्य प्राप्त करने में सक्षम नहीं रहा है जिससे वर्तमान प्रयोजन हेतु सामान्य मूल्य का बिल्कुल सही और पर्याप्त आकलन किया जा सके ।

घ.2 निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जांच

13. धारा 9क(1)(ग) के अनुसार प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ सभा ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली की प्रतियां भेजी थीं । यूरोपीय संघ से किसी भी उत्पादक और निर्यातक ने निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष प्रश्नावली का कोई उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है । किसी आंकड़े के अभाव में प्राधिकारी नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों पर विश्वास करने का प्रस्ताव करते हैं ।

घ.3 पाटन मार्जिन की गणना हेतु पद्धति

सामान्य मूल्य

14. प्राधिकारी ने सोडियम नाइट्राइट के विनिर्माण हेतु सामान्य मूल्य का परिकलन मानक निविष्टि-उत्पादन प्रृष्ठियाँ (एसआईओएन) और यूरोप में प्रचलित कीमतों, जैसी कि अंतर्राष्ट्रीय रूप से अनुपालन की गई और व्यापक रूप से प्रसारित पत्रिका आईसीएसएलओआर में दी गई है, के अनुसार कास्टिक सोडा की कच्ची सामग्री की कीमतों, डीजीसीआईएंड एस द्वारा प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार अमोनिया की अंतर्राष्ट्रीय कीमत पर विचार करते हुए किया है । उपर्युक्त उपलब्ध सूचना के आधार पर सामान्य मूल्य की गणना *** अम.डॉ. प्रति मी.टन के रूप में की गई है जिसमें जांच अवधि के दौरान औसत विनिमय द्वारा 1 अम.डॉ.= 45.57 रुपए मानी गई है ।

निर्यात कीमत

15. निर्यात कीमत का निर्धारण डीजीसीआईएंड एस द्वारा प्रदत्त सौदावार व्यारों के आधार पर किया गया है । जांच अवधि के दौरान भारित औसत निर्यात कीमत का सीआईएफ मूल्य *** रुपए प्रति मी.टन (*** अम.डा./मी.टन) था । अंतर्देशीय भाड़ा, समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा, कमीशन, पत्तन व्ययों और बैंक प्रभारों हेतु समायोजन किए जाने के पश्चात निर्यात कीमत की गणना *** अम.डा./मी.टन(जांच अवधि के दौरान 1 अम.डॉ. = 45.57 रु.) के रूप में की गई थी ।

पाटन मार्जिन

16. ऊपर यथानेधारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के आधार पर प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नानुसार किया है :-

पाटन मार्जिन

निर्यातक/उत्पादक	सामान्य मूल्य अम.डॉ./मी.टन	निर्यात कीमत अम.डॉ./मी.टन	पाटन मार्जिन अम.डॉ./मी.टन	पाटन मार्जिन %
यूरोपीय संघ के सभी निर्यातक	***	***	***	60.70%

निर्धारित पाटन मार्जिन काफी अधिक और निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक है ।

क्षति निर्धारण और कारणात्मक संबंध की जांच हेतु पद्धति

क्षति निर्धारण

क्षति का जारी रहना

घरेलू उद्योग के विचार

17. घरेलू उद्योग के निष्पादन में निर्यात की कम मात्राओं के साथ वर्ष 2003-04 में अनेक मापदंडों के अनुसार सुधार हुआ। तथापि, 2004-05, 2005-06 और जांच अवधि में आयात मात्राओं में वृद्धि के कारण एक बार फिर निष्पादन की स्थिति खराब हुई है। बढ़ते हुए आयातों के कारण निष्पादन में विकृति स्पष्ट रूप से यह दर्शाती है कि घरेलू उद्योग के निष्पादन में परिवर्तन पाठित आयातों के कारण हुआ है। इसके अलावा, संबद्ध देश से पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्तियों से कम रहा है। आयातों के कारण कीमत कटौती होना जारी है जिसके परिणामस्वरूप आयातों की मात्रा और बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है। इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है। आयातों में वृद्धि और बाजार हिस्से तथा उसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित कीमतों से लाभ/हानि की स्थिति, निवेश पर आय तथा नकद प्रवाह की स्थिति में आगे और खराबी आने से यह प्रदर्शित होता है कि संबद्ध आयातों के जारी रहने से घरेलू उद्योग की स्थिति और खराब बनी रहेगी। इसके अलावा, चीन के विरुद्ध निर्णायक समीक्षा जांच के मामले में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अधिसूचित इन अंतिम जांच परिणामों में कि घरेलू उद्योग को वर्ष 2003-04 में क्षति हुई थी और 2003-04 तथा 2006-07 के बीच घरेलू उद्योग के निष्पादन में काफी विकृति आई थी। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जबकि घरेलू उद्योग पहले से ही क्षति उठा रहा था, तब यूरोप से पाटन के कारण उसकी क्षति में और वृद्धि हुई। घरेलू उद्योग के निष्पादन में उत्पादन, क्षमता उपयोग, बाजार हिस्सा, कीमतों, लाभ/हानि, निवेश पर आय, नकद प्रवाह और संवृद्धि की दृष्टि से काफी विकृति आई है। स्पष्ट रूप से घरेलू उद्योग की स्थिति खराब बनी हुई है। इसके अलावा, यदि इस स्थिति में लागू पाटनरोधी शुल्क को हटाया जाता है तो इस निष्पादन में आगे और विकृति आएगी।

प्राधिकारी द्वारा जांच

18. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति के संबंध में दिए गए विभिन्न तर्कों को नोट किया है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि यूरोपीय संघ के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क लागू है। यूरोपीय संघ के संबंध में अपने अंतिम निर्धारण में प्राधिकारी ने यह निर्धारित किया है कि संबद्ध देश से आयात पाठित कीमतों घर किए गए थे। अतः क्षति एवं कारणात्मक संबंध के विश्लेषण के प्रयोजनार्थ संबद्ध देश से हुए आयातों को पाठित आयात माना गया है।

19. पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.1 और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में पाठित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में इन दोनों की वस्तुनिष्ठ जांच की व्यवस्था है (क) पाठित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के घरेलू बाजार में कीमतों पर पाठित आयातों के प्रभाव और (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव। प्राधिकारी से यह जांच किया जाना अपेक्षित है कि क्या आयातों में समग्र रूप से अथवा आयातक सदस्य देश में उत्पादन अथवा खपत के संबंध में भारी वृद्धि हुई है। पाठित आयातों

के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी द्वारा यह जांच किया जाना अपेक्षित है कि क्या आयातक देश में समान उत्पाद की कीमतों की तुलना में पाटित आयातों द्वारा भारी कीमत कटौती की गई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में अत्यधिक कटौती करना है या ऐसी कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा उच्च स्तर तक बढ़ गई होती ।

20. क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के मात्रा और कीमत प्रभावों की जांच की है और क्षति की मौजूदगी तथा पाटन और क्षति के बीच कारणात्मक संबंध, यदि कोई हो, की जांच हेतु कीमतों और लाभप्रदता पर इसके प्रभाव की जांच की है ।

(क) मात्रात्मक प्रभाव: पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव :

21. संबद्ध देश से पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभावों की निम्नानुसार जांच की गई है :

(i) आयात मात्राएं तथा संबद्ध देश का हिस्सा

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	आंशिक अवधि
बाजार हिस्सा					
आयात में					
ईयू	मी.टन	798	2,706	3,458	2668
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	339	433	334
चीन (वह देश जिस पर पाटनरोधी शुल्क लागू है)	मी.टन	2785	2,519	5,138	6065
अन्य देश	मी.टन	1964	699	358	0
कुल आयात	मी.टन	5547	5,924	8,954	8733
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	107	161	157
आयात में बाजार हिस्सा					
ईयू	%	14.39	45.69	38.62	30.55
चीन (वह देश जिस पर पाटनरोधी शुल्क लागू है)	%				
		50.21	42.51	57.38	69.45
अन्य देश	%	35.40	11.80	4.00	0.00

22. डीजीसीआईएंड एस ने आयातों के संबंध में सौदावार आंकड़े उपलब्ध कराए हैं । इन पर विश्लेषण हेतु विश्वास किया गया है । ये आंकड़े दर्शाते हैं कि कुल आयातों में वर्ष 2003-04 (आधार वर्ष) में 5547 मी.टन से अक्टूबर, 2005 से सितंबर, 2006 (जांच अवधि) के दौरान 8733 मी.टन की वृद्धि हुई है । यह भी नोट किया जाता है कि संबद्ध देश से आयातों में आधार वर्ष से समग्र रूप में 224% की वृद्धि हुई है । कुल आयातों में संबद्ध देश के हिस्से, जो आधार वर्ष में केवल 14.39% था, में जांच अवधि के दौरान 30.55% तक की वृद्धि हुई है ।

23. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि चीन जन.गण.(वह देश जिस पर पहले से पाटनरोधी शुल्क लागू है) से हुए आयातों में भी आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान

2785 मी.टन से 6065 मी.टन अर्थात् 118% की वृद्धि हुई है। चीन जन.गण. का हिस्सा 50.21% से बढ़कर 69.45% हो गया है। अन्य देशों का हिस्सा जो पहले 35.40% के उच्च स्तर पर था जांच अवधि के दौरान शून्य रह गया है। आंकड़ों से यह प्रदर्शित होता है कि संबद्ध देश और चीन जन.गण. ने आयातों में अपने हिस्से में वृद्धि की है।

(II) मांग, उत्पादन और बाजार हिस्सा

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
मांग	मी.टन	29994	30,806	33,808	33,225
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	103	113	111
घरेलू उद्योग	मी.टन	20,557	20,711	20,936	20,804
घरेलू उद्योग की आबद्ध खपत	मी.टन	1,078	1,358	1,105	876
आबद्ध खपत समेत अन्य	मी.टन				
उत्पादक की बिक्रियां		2,813	2,813	2,813	2,813
कुल आयात	मी.टन	5547	5,924	8,954	8,733
मांग में बाजार हिस्सा					
घरेलू उद्योग (व्यापारिक बिक्रियां)	%	68.54	67.23	61.93	62.61
आबद्ध खपत	%	3.59	4.41	3.27	2.64
अन्य भारतीय उत्पादक	%	9.38	9.13	8.32	8.46
ईंयू से आयात	%	2.66	8.79	10.23	8.03
चीन से आयात	%	9.29	8.18	15.20	18.26
अन्य देशों से आयात	%	6.55	2.27	1.06	0.00

24. संबद्ध वस्तु की मांग का परिकलन सभी उत्पादकों की घरेलू बिक्रियों, आबद्ध खपत और सभी देशों से सभी आयातों को जोड़कर किया गया है। अन्य उत्पादों की बिक्रियों का अनुमान घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त सूचना के अनुसार लगाया गया है। उपर्युक्त आंकड़े यह इंगित करते हैं कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान मांग में 11% की वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग का मांग में बाजार हिस्सा आधार वर्ष में 68.54% से घटकर जांच अवधि के दौरान 62.61% रह गया है। यह भी नोट किया गया है कि आबद्ध खपत की हिस्सा इसी अवधि के दौरान 3.59% से घटकर 2.64% रह गया है।

25. संबद्ध वस्तु की मांग का आकलन जांच अवधि के दौरान 33225 मी.टन के रूप में किया गया है जिसमें आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 3231 मी.टन की वृद्धि हुई है। तथापि, घरेलू उद्योग की क्षमता में इसी अवधि के दौरान कोई वृद्धि नहीं हुई है। इन वर्षों के दौरान यह 23500 मी.टन रही है। जांच अवधि के दौरान उत्पादन 100% क्षमता उपयोग पर 23369 मी.टन रहा था जिससे देश के भीतर मांग एवं पूर्ति में अंतर का संकेत मिलता है।

26. संबद्ध देश की मांग में हिस्से में आधार वर्ष में 2.66% से जांच अवधि में 8.03% की वृद्धि हुई है। इसी अवधि के दौरान चीन जन.गण. (वह देश जिस पर पहले से पाटनरोधी शुल्क लागू है) से आयातों के हिस्से में भी 9.29% से 18.26% की वृद्धि हुई है।

(क) घरेलू उद्योग की क्षमता, क्षमता उपयोग और उत्पादन

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
क्षमता	मी.टन	23,500	23,500	23,500	23,500
क्षमता उपयोग	%	102	105	105	100
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	103	103	98
उत्पादन	मी.टन	23,928	24,584	24,564	23,369
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	103	103	98

27. आंकड़ों से यह प्रदर्शित होता है कि घरेलू उद्योग की क्षमता क्षति अवधि के दौरान एक समान रही है। यह संपूर्ण अवधि के दौरान 23,500 मी.टन के रूप पर रही है। तथापि, इससे यह भी प्रदर्शित होता है कि घरेलू उद्योग बताई गई स्थानिक क्षमता से अधिक वस्तुओं का उत्पादन कर सकता है। उत्पादन वर्ष 2004-05 में बताई गई क्षमता से 5% अधिक था तथापि, 2005-06 और जांच अवधि में उत्पादन में गिरावट आई है। यह भी नोट किया जाता है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की क्षमता पूर्णतः प्रयुक्त हुई है। उत्पादन में वृद्धि और गिरावट से नियात और आबद्ध खपत में वृद्धि और गिरावट के साथ उसके कुछ संबंध का संकेत मिलता है।

(ख) घरेलू उद्योग की विक्रियां

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
विक्रियां-घरेलू	मी.टन	20,557	20,711	20,936	20,804
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	101	102	101
विक्रियां-नियाति	मी.टन	2,246	2,769	1,558	1,672
कुल विक्री	मी.टन	22,803	23,479	22,494	22,475
आबद्ध खपत	मी.टन	1,078	1,358	1,105	876
आबद्ध समेत विक्रियां	मी.टन	23,881	24,838	23,599	23,351
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	104	99	98

28. आंकड़ों से यह पता चलता है कि संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान घरेलू व्यापारिक विक्रियां में कोई खास उतार-चढ़ाव प्रदर्शित नहीं होता है। यह उतार-चढ़ाव कमोबेश 1% की रेंज के भीतर रहा है। आधार वर्ष से जांच अवधि तक विक्रियां में 1% अर्थात् 247 मी.टन तक की वृद्धि हुई है। नियाति विक्रियां में गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है। आधार वर्ष में 2246 मी.टन से जांच अवधि में 1672 अर्थात् 574 मी.टन की गिरावट आई है। इसी प्रकार, आबद्ध खपत में भी गिरावट की प्रवृत्ति दर्शायी गई है। इसमें आधार वर्ष में 1078 मी.टन से जांच अवधि में 876 मी.टन अर्थात् 202 मी.टन तक की गिरावट आई है।

29. घरेलू उद्योग की औसत वस्तु सूची वृद्धि की प्रवृत्ति दर्शाती है। इसमें 2004-05 की तुलना में 2005-06 में 356 मी.टन की वृद्धि हुई है और तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 66 मी.टन की गिरावट आई है। बिक्री दिवसों की संख्या के अनुसार मापी गई औसत वस्तु सूची से पता चलता है कि इसमें आधार वर्ष में 8 दिनों की तुलना में जांच अवधि में 12 दिनों तक की वृद्धि हुई है।

(ख) घरेलू उद्योग पर पाठित आयातों का कीमत प्रभाव

30. संबद्ध देश से पाठित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर पड़े प्रभाव की जांच कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत हास और कीमत मंदी यदि कोई हो, के संदर्भ में की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की भारित औसत उत्पादन लागत, भारित औसत निवल बिक्री प्राप्ति (एनएसआर) और क्षति रहित कीमत (एनआईपी) (घरेलू उद्योग की लागत निर्धारण संबंधी सूचना के आधार पर परिकलित) की तुलना संबद्ध देश से हुए आयातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है।

कीमत कटौती

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
नियात कीमत	रु./मी.टन	14,030	13,890	15,336	16,584
पहुंच मूल्य	रु./मी.टन	17,604	16,695	17,659	18,678
निवल बिक्री प्राप्ति	रु./मी.टन	***	***	***	***
उत्पादन लागत	रु./मी.टन	***	***	***	***
कीमत कटौती	रु./मी.टन	***	***	***	***
कीमत कटौती (रेंज)	%				5 से 10

कम कीमत पर बिक्री

(मूल्य रुपए/मी.टन में)

निवल बिक्री प्राप्ति	***
क्षतिरहित कीमत	***
पहुंच मूल्य	18,678
कम कीमत पर बिक्री	***
कम कीमत पर बिक्री (%)	***
कम कीमत पर बिक्री की रेंज	35-40%

31. जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु हेतु पाठित आयातों के भारित औसत पहुंच मूल्य और घरेलू बाजार में घरेलू बिक्री कीमत के बीच एक तुलना की गई थी। घरेलू उद्योग की

निवल बिक्री प्राप्ति के निर्धारण में घरेलू उद्योग द्वारा करों, रिबेट, छूटों और कमीशन को समायोजित किया गया है।

32. संबद्ध देश से निर्यात कीमत में वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है। निर्यात कीमत में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में 2554 रुपए पीएमटी तक की वृद्धि हुई है। इसी अवधि के दौरान सीमाशुल्क में आधार वर्ष में 25% से जांच अवधि में 12.5% तक की गिरावट आई। इसके परिणामस्वरूप संबद्ध देश के पहुंच मूल्य में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में 1105 रुपए पीएमटी तक की वृद्धि हुई। इस अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमत में 5% तक की गिरावट आई। संबद्ध देश से हुए आयातों द्वारा (पाटनरोधी शुल्क के बिना) घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में कटौती किया जाना संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान जारी रहा था। यद्यपि इसमें आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में गिरावट आई थी। यह कटौती जांच अवधि के दौरान 5 से 10% के बीच थी। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि संबद्ध देश से आयातों द्वारा की गई कटौती (पाटनरोधी शुल्क के साथ) जांच अवधि के दौरान ऋणात्मक थी।

33. उत्पादन लागत संबंधी आंकड़ों से यह प्रदर्शित होता है कि उत्पादन लागत में आधार वर्ष से जांच अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। इसमें आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 15% तक की वृद्धि हुई। बिक्री कीमत संबंधी आंकड़ों से यह प्रदर्शित होता है कि बिक्री कीमत में आधार वर्ष से जांच अवधि के दौरान गिरावट आई है। जांच अवधि में जब उत्पादन लागत में 15% की वृद्धि हुई, तब बिक्री कीमत में आधार वर्ष की तुलना में 5% तक की गिरावट आई जिसके परिणामस्वरूप घाटे में वृद्धि हुई और इससे यह संकेत मिलता है कि कीमतें हासमान बनी रही।

34. कम कीमत पर बिक्री क्षति के आकूलन का एक महत्वपूर्ण संकेतक है; इस प्रकार प्राधिकारी ने क्षति रहित कीमत ज्ञात की है और कम कीमत पर बिक्री की मात्रा ज्ञात करने के लिए इसकी तुलना पहुंच मूल्य के साथ की है। घरेलू उत्पादक के लिए क्षतिरहित कीमत का मूल्यांकन जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद हेतु उत्पादन लागत पर समुचित रूप से विचार करते हुए किया गया है। विश्लेषण से यह पता चलता है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का भारित औसत पहुंच मूल्य जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित क्षतिरहित कीमत से कम है। जांच अवधि के दौरान कम कीमत पर बिक्री 35-40% के बीच थी।

क्षति संबंधी अन्य मापदंडों की जांच

35. पूर्ववर्ती खंड में घरेलू उद्योग की मात्राओं और कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव और मात्रा तथा आयातों के मूल्य, क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और घरेलू उद्योग की बिक्री, तथा विभिन्न तबकों के बाजार हिस्सों की मांग की प्रवृत्ति की जांच करने के बाद घरेलू उद्योग को हुई क्षति की मौजूदगी का संकेत कर सकने वाले अन्य आर्थिक मापदंडों का भी निम्नानुसार विश्लेषण किया गया है:

(i) लाभ तथा नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित प्रभाव

(व्यापारिक बिक्री)

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
लाभप्रदता					
भारित बिक्री लागत	रु./मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	103	113	115
बिक्री कीमत	रु./मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	93	98	95
लाभ/हानि	रु./मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	(2,736)	(3,919)	(5,281)
कुल लाभ/हानि-घरेलू	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	(2,757)	(3,991)	(5,345)
पीबीआईटी	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	(180)	(272)	(448)
नकद लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	(253)	(384)	(552)

36. घरेलू उद्योग की व्यापारिक बिक्रियों की लाभप्रदता का विश्लेषण कंपनी के रिकार्ड्स से किया गया है।

37. उत्पादन लागत में आधार वर्ष से वर्ष 2004-05 में 3%, 2005-06 में 13% और जांच अवधि के दौरान 15% तक की वृद्धि हुई है। निवल बिक्री कीमत में आधार वर्ष से 2004-05 में 7%, 2005-06 में 2% और जांच अवधि के दौरान 5% तक की गिरावट आई है। घरेलू उद्योग के घाटों में जांच अवधि में वृद्धि हुई है। उद्योग जो आधार वर्ष में नकद लाभ में था वह जांच अवधि में नकद घाटों की स्थिति में पहुंच गया।

(ii) रोजगार एवं मजदूरी

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच
रोजगार					
कर्मचारी	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	98	95	100
कर्मचारियों को दी गई मजदूरी	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	150	137	127

38. घरेलू उद्योग की कंपनियां बहु उत्पाद कंपनियां हैं। संबद्ध वस्तु के लिए कर्मचारियों की संख्या को पृथक करना संभव नहीं था इसलिए विश्लेषण हेतु कंपनियों के कर्मचारियों का समग्र रूप से प्रयोग किया गया है। आंकड़े प्रदर्शित करते हैं कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में कर्मचारियों की संख्या में परिवर्तन नहीं हुआ था। तथापि, इसी अवधि के दौरान कर्मचारियों को दी जाने वाली मजदूरी में 27% की वृद्धि हुई थी।

(iii) उत्पादकता

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
उत्पादकता					
उत्पादन	मी.टन	***	***	***	***
प्रति दिवस	मी.टन	***	***	***	***
उत्पादकता		***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	103	103	98

39. प्रति दिवस उत्पादन में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 98% की गिरावट आई थी।

(iv) वस्तु सूची

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
औसत वस्तु सूची	मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	78	153	139
बिक्री दिवसों की संख्या	दिन	8	7	13	12

40. घरेलू उद्योग की औसत वस्तु सूची में वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है। इसमें आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में 39% तक की वृद्धि हुई है। यह 2004-05 की तुलना में 2005-06 में बढ़कर 356 मी.टन तक हो गई थी और तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान इसमें 66 मी.टन तक की गिरावट आई थी। बिक्री दिवसों की संख्या के रूप में माझे गई औसत वस्तु सूची से प्रदर्शित होता है कि इसमें आधार वर्ष में 8 दिनों की तुलना में जांच अवधि में 12 दिनों तक की वृद्धि हुई थी।

(v) निवेश पर आय और पूँजी जुटाने की कमता

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
एनएफए	लाख रुपए	***	***	***	***
कार्यशील पूँजी	लाख रुपए	***	***	***	***
लगाई गई पूँजी-एनएफए आधार पर	लाख रुपए	***	***	***	***
लगाई गई पूँजी पर आय	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	(168)	(190)	(303)

41. जांच अवधि के दौरान लगाई गई पूँजी में निवल अचल परिसंपत्तियों और कार्यशील पूँजी दोनों की दृष्टि से 51% की वृद्धि हुई है। वर्ष 2005-06 के दौरान घरेलू उद्योग ने क्षमता में कोई वृद्धि किए बिना संयंत्र एवं मशीनरी की कतिपय मदों के स्थान पर नए संयंत्र एवं मशीनरी लगाने के लिए पूँजीगत व्यय किया है। लगाई गई पूँजी पर आय जो आधार वर्ष में धनात्मक थी, वर्ष 2004-05 में ऋणात्मक हो गई और उसके बाद इसका ऋणात्मक रहना जारी रहा। इससे सतत आधार पर लाभप्रदता में भारी विकृति का पता चलता है।

(vi) लाभ तथा नकद प्रवाह पर वास्तविक एवं संभावित प्रवाह

42. घरेलू उद्योग एक बहु उत्पाद कंपनी है इसलिए उत्पाद के नकद प्रवाह की वास्तविक मात्रा का निर्धारण करना संभव नहीं था।

(vii) कीमत को प्रभावित करने वाले कारक

43. संबद्ध देश से निर्यात कीमतों के मूल्यांकन से यह पता चलता है कि इसमें आधार वर्ष से जांच अवधि के दौरान 18% तक की वृद्धि हुई थी। तथापि, आधार वर्ष से जांच अवधि के बीच सीमांशुल्क में गिरावट आई थी। इसमें वर्ष 2003-04 में 25% से जांच अवधि के दौरान 12.5% की गिरावट आई थी। परिणामस्वरूप संबद्ध वस्तु के पहुंच मूल्य में आधार वर्ष से जांच अवधि के दौरान 6% की वृद्धि हुई थी। इसी अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री लागत में तथापि 15% की वृद्धि हुई थी।

क्षति संबंधी निष्कर्ष

44. संबद्ध वस्तु की मांग में वर्ष 2005-06 और जांच अवधि के दौरान वर्ष 2003-04 (आधार वर्ष) की तुलना में क्रमशः 13%, 11% की वृद्धि हुई थी। तथापि, घरेलू उद्योग की क्षमता संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान एक समान रही थी। घरेलू उद्योग की व्यापारिक बिक्रियां भी कमोबेश 1% के सूक्ष्म उतार-चढ़ाव के साथ समान स्तर पर रही थी। निर्यात बिक्रियों और आबद्ध खपत से संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है। उत्पादन में गिरावट के साथ निर्यात बिक्रियों और आबद्ध खपत में भी गिरावट आई है। तथापि, औसत वस्तु सूची में जांच अवधि के दौरान स्टॉक एकत्र करने और बिक्री के चार दिवसों के बराबर स्टॉक तक की वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान पूर्णतः प्रयुक्त रहा है।

45. आधार वर्ष की तुलना में बिक्री लागत में 2004-05 में 3%, 2005-06 में 13% और जांच अवधि में 15% तक की वृद्धि हुई है। तथापि, बिक्री कीमत में 2004-05 में 93%, 2005-06 में 98% और जांच अवधि में 95% तक की गिरावट आई है। लाभप्रदता (लाभ/हानि प्रति मी.टन) में 2003-04 और उसके बाद बिक्री लागतों के बढ़ने और बिक्री कीमतों के घटने के कारण विकृति प्रदर्शित होती है। लाभों (पीबीआईटी) और नकद लाभों में विकृति की समान प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है। लगाई गई पूँजी पर आय में भी समान प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है और इसमें भी विकृति बनी रही है।

46. उपर्युक्त विश्लेषण से पता चलता है कि घरेलू उद्योग ने यद्यपि अपनी क्षमता का पूर्णतः उपयोग किया है तथापि, उसे लगातार घाटे हुए हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि घरेलू उद्योग को लगातार क्षति हुई है।

अन्य ज्ञात कारक

अन्य स्रोतों से आयातों की मात्रा एवं कीमत

47. यह देखा गया है कि चीन जन.गण. (वह देश जिस पर प्राटनरोधी शुल्क पहले से लागू है) से हुए आयात संबद्ध देश से हुए आयातों के पूरक बन रहे हैं। चीन जन.गण. से आयात आधार वर्ष में 2785 मी.टन से बढ़कर जांच अवधि में 6065 मी.टन हो गए हैं। अन्य देशों से हुए आयातों में आधार वर्ष से जांच अवधि के दौरान गिरावट होना जारी रहा है। यह आधार वर्ष में 2362 मी.टन थे और घटकर 2004-05 में 699 मी.टन और जांच अवधि में 358 और 03 मी.टन रह गए थे। अतः चीन जन.गण. से इतर अन्य देशों से हुए आयात घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं हो सकते हैं।

मांग में संकुचन और/या खपत की प्रवृत्ति में परिवर्तन

48. विद्यासाधीन उत्पाद की मांग में कोई ऋणात्मक वृद्धि दर्ज नहीं हुई है। मांग में संकुचन वह संभव कारण नहीं है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती हो।

व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं और विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा

49. संबद्ध वस्तु मुक्त रूप से आयात की जा सकती है और घरेलू बाजार में कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रियाएं नहीं हैं। अतः इस कारक के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो सकती है।

प्रौद्योगिकी का विकास और निर्यात निष्पादन

50. उत्पाद के उत्पादन हेतु प्रौद्योगिकी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। प्रौद्योगिकी में विकास क्षति का एक कारक नहीं है। घरेलू उद्योग ने कुछ निर्यात कार्यकलाप किए हैं तथापि निर्यातों में गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है और आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान मात्रा में 574 मी.टन की गिरावट आई है।

घरेलू उद्योग की उत्पादकता

51. प्रति दिवस उत्पादन के रूप में मात्री मई घरेलू उद्योग की उत्पादकता से यह प्रदर्शित होता है कि संपूर्ण जांच अवधि के दौरान उत्पादकता में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

कारणात्मक संबंध

52. आपूर्ति और मांग में अंतर के महेनजर, आयात हो रहे थे। अद्दीती हुई मांग में घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आनी ही थी। अतः बढ़ते हुए आयात घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट का कारण नहीं हो सकता है विशेष रूप से जबकि घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमता का पूर्णतः उपयोग करना जारी रखा है।

53. तथापि अपनी क्षमता के पूर्ण उपयोग के बावजूद, घरेलू उद्योग को प्राथमिक रूप से बढ़ती हुई उत्पादन लागत के बावजूद बिक्री कीमत में वृद्धि करने में उनकी विफलता के कारण घाटा हुआ है। घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमत में जांच अवधि, जब पहुंच मूल्य में हुई वृद्धि के साथ निवल बिक्री कीमत में वृद्धि नहीं हुई थी, को छोड़कर न्यूनतम पहुंच मूल्य (पाटनरोधी शुल्क सहित पहुंच मूल्य) जैसी समान प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है। यह प्रवृत्ति दर्शाती है कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत पर आयातों के पहुंच मूल्य का प्रभाव पड़ा था।

54. संबद्ध वस्तु का पाटन दो स्रोतों अर्थात् यूरोपीय संघ और चीन जन.गण. से हो रहा है। दो स्रोतों से आयातों से प्रतिस्पर्धा का संकेत मिलता है। प्रत्येक स्रोत से आयातों में वृद्धि और कमी उनकी निर्यात कीमतों में हुए उत्तार-चढ़ाव से स्पष्ट रूप से जुड़ी हुई प्रदर्शित होती है। इ यू से 2004-05 में कीमतों में गिरावट से आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई थी (2004-05 के दौरान चीन से निर्यात कीमत में वृद्धि हुई थी और आयात मात्रा में कमी आई थी)। 2005-06 में यद्यपि इ यू से कीमतों में वृद्धि हुई थी, तथापि मात्रा में भी वृद्धि हुई थी। हालांकि चीन जन.गण. की निर्यात कीमत में मामूली वृद्धि हुई थी और मात्रा में भी वृद्धि हुई थी। जांच अवधि में ई.यू. से कीमतों में वृद्धि हुई और मात्रा में कमी आई परंतु चीन जन.गण. से कीमतों में कमी आई और मात्रा में वृद्धि हुई।

55. उपर्युक्त के महेनजर प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के निष्पादन में आई गिरावट और उसे हुई क्षति के लिए यूरोपीय संघ (और चीन जन.गण.) से हुए पाटित आयात उत्तरदायी हैं।

पाटन के जारी रहने की संभावना

56. प्राधिकारी नोट करते हैं कि दिनांक 28.10.2002 को संपन्न मूल जांच में जर्मनी के निर्यातक (मे. बीएसएफ अक्टीनजेनसेलसाफ्ट) ने प्राधिकारी के साथ सहयोग नहीं किया था और उसका मत है कि "यह स्पष्ट है कि 41.3% के नियमित शुल्क के कारण पाटन होना स्वाभाविक है।" वर्तमान समीक्षा में यूरोपीय संघ से किसी निर्यातक ने सहयोग नहीं किया है और सूचना प्रस्तुत नहीं की है। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि अमेरिका द्वारा यूरोपीय संघ से सोडियम नाइट्राइट के आयातों से संबंधित पाटनरोधी शुल्क लगाया गया है (जांच संख्या 701-टीए-453 और 731-टीए-1136-1137 (प्रारंभिक))। घरेलू उद्योग ने इस बात पर ध्यान दिलाया है कि अमेरिका द्वारा पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद ई यू के निर्यातक यदि शुल्क वापस लिया जाता है तो भारत में वस्तुओं का पाटन कर सकते हैं।

57. यूरोपीय संघ से निर्यातकों द्वारा किसी उत्तर के अभाव में और इस जांच परिणाम के पूर्ववर्ती खंड में पाटन मार्जिन के सकारात्मक निर्धारण रिकार्ड में ऐसी कोई सामग्री, परिस्थिति या यह विश्वास करने का कारण नहीं है कि शुल्क हटाए जाने के बाद यूरोपीय संघ से पाटन समाप्त हो जाएगा।

क्षति के जारी रहने की संभावना

58. जैसा कि पूर्ववर्ती खंड में विश्लेषण किया गया है घरेलू उद्योग को उत्पादन लागत में वृद्धि के बावजूद बिक्री कीमत में कटौती के कारण क्षति होना जारी है। यह भी नोटिस किया गया है कि जांच अवधि के दौरान यूरोपीय संघ से आयातों द्वारा घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत

में मामूली ऋणात्मक कटौती की गई थी। यह भी नोटिस किया गया है कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत ने विभिन्न स्रोतों से पाटित आयातों के कम, पहुंच मूल्य की प्रवृत्ति का अनुसरण किया है। यदि शुल्क हटाया जाता है तो पहुंच मूल्य पाटनरोधी शुल्क की वर्तमान राशि तक आगे और कम हो जाएंगे और सकारात्मक कटौती होगी। इससे घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत पर दबाव पड़ेगा। घरेलू उद्योग पहले से धाटा उठा रहा है और बिक्री कीमत में गिरावट के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के निष्पादन में आगे और विकृति आएगी। अतः प्राधिकारी मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने से घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति में बढ़ोत्तरी हो सकती है।

झ. अंतिम निष्कर्ष

59. पूर्वोक्त पर विचार करने के बाद प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि:

- (क) संबद्ध देशों के मूल की अथवा बहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं का भारत में उनके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर निर्यात किया गया है जिसके परिणामस्वरूप पाटन हुआ है।
- (ख) पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है;
- (ग) और संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क समाप्त करने के परिणामस्वरूप पाटन जारी रह सकता है और घरेलू उद्योग को क्षति जारी रह सकती है अथवा इसमें और बढ़ोत्तरी हो सकती है।

(1) भारतीय उद्योग का हित एवं अन्य मुद्दे

60. प्राधिकारी मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से भारत में उत्पाद के कीमत पर स्तर प्रभावित हो सकते हैं। तथापि, इन पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत पाटनरोधी उपाय लागू करने से पाटन प्रथाओं द्वारा प्राप्त किए गए अनुचित लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग का ह्रास रुकेगा और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं हेतु व्यापक पसंद की उपलब्धता बनाए रखने में मदद मिलेगी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपायों से संबद्ध देशों से आयात किसी भी तरीके से कम नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं हेतु उत्पाद की उपलब्धता पर असर नहीं पड़ेगा। उपभोक्ता जब भी दो या इससे भी अधिक आपूर्ति के स्रोत बनाए रख सकते हैं।

61. पाटनरोधी शुल्कों का उद्देश्य आम तौर पर पाटन की अनुचित व्यापार प्रथाओं द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर करना है ताकि भारतीय बाजार में उचित एवं खुली प्रतिस्पर्धा की स्थिति को पुनः स्थापित किया जा सके जो देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी उपाय लागू करने से संबद्ध देश से आयात किसी भी तरीके से कम नहीं होंगे और इसलिए इससे उपभोक्ताओं हेतु उत्पाद की उपलब्धता पर असर नहीं पड़ेगा।

ट. सिफारिशें

62. संबद्ध देशों से आयातों के कारण पाटन और क्षति की संभावना के सकारात्मक निर्धारण के महेनजर प्राधिकारी का यह मत है कि संबद्ध देशों/क्षेत्र से आयातों के विरुद्ध उपाय को जारी रखना अपेक्षित है। तथापि संबद्ध देशों से पाटन के वर्तमान स्तर और घरेलू उद्योग को हुई क्षति पर विचार करते हुए प्राधिकारी का यह मत है कि लागू उपाय को संशोधित किए जाने की जरूरत है। प्रतः प्राधिकारी संबद्ध देशों/क्षेत्र से संबद्ध वस्तु के आयातों पर नीति विनिर्दिष्ट विधि एवं ढंग से पाटनरोधी शुल्क लगाना आवश्यक समझते हैं और उसकी अनुशंसा करते हैं।

63. प्राधिकारी द्वारा अनुसरण किए गए कम शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यूरोपीय संघ के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटन मार्जिन अथवा क्षति मार्जिन जो भी कम हो, के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क को लागू रखने की अनुशंसा करते हैं ताकि पाटन की क्षतिपूर्ति और घरेलू उद्योग की क्षति को दूर किया जा सके। इस मामले में प्राधिकारी संदर्भ कीमत आधार पर पाटनरोधी शुल्क लगाना उचित समझते हैं और तदनुसार निम्नांकित तालिका के कालम-8 में दर्शाए गए शुल्क और पहुंच मूल्य के बीच के अंतर के रूप में निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं, जिसे केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से यूरोपीय संघ के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर लगाया जाना है।

क्र. सं.	टैरिफ मद	वस्तुओं का विवरण	उदगम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	माप की इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	2834.2901	सोडियम नाइट्राइट	यूरोपीय संघ	यूरोपीय संघ	कोई	कोई		मी.टन	रुपए
2.	-वही-	सोडियम नाइट्राइट	यूरोपीय संघ	यूरोपीय संघ से इतर कोई	कोई	कोई	25235	मी.टन	रुपए
3.	-वही-	सोडियम नाइट्राइट	संबद्ध देश से इतर कोई	यूरोपीय संघ	कोई	कोई	25235	मी.टन	रुपए

64. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के अंतर्गत सीमाशुल्क विज्ञा ग द्वारा यथा आकलन योग्य मूल्य होगा और इसमें सीमाशुलक टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी शुल्क शामिल होंगे।

65. इस आदेश के विरुद्ध अपील इस अधिनियम के संगत प्रावधानों के अनुसार सीमाशुल्क उत्पाद शुल्क और सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जा सकेगी।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 3rd March, 2008

Final Findings

(Sunset Review)

Subject : Anti-Dumping (Sunset Review) Investigations concerning Imports of Sodium Nitrite originating in or exported from European Union.

No. 15/6/2006 (SSR)-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975, (hereinafter referred to as Act.) as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (hereinafter referred to as Rules.);

A. BACKGROUND

2. Whereas, having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, the Designated Authority (herein after referred to as Authority) recommended imposition of Anti Dumping Duty on imports of Sodium Nitrite (hereinafter referred to as subject goods) originating in or exported from European Union (hereinafter referred to as subject countries/territory). The preliminary findings, final findings and amendment notification of the Authority were published vide notifications No.54/1/2001-DGAD dated 1.2.2002, 28.10.2002 and on 24.3.2005 respectively. On the basis of findings and amendment, provisional duty, definitive anti dumping duties and amended definitive duties on the subject goods imported from subject countries/territory were imposed by the Department of Revenue vide notifications Nos. 34/2002-Customs dated 28.3.2002, 132/2002-Customs dated 29.11.2002 and notification No.51/2005-customs dated 27.5.2005 respectively.

3. The Designated Authority, in terms of section 9A (5) of said Act. received a substantiated application from M/s. Deepak Nitrite Ltd, Pune and M/s Punjab Chemicals & Crop Protection Ltd., Chandigarh requesting for review and continuation of the anti-dumping duties levied on the subject goods, for another five years on the grounds that the dumping had continued in spite of imposition of anti-dumping duty on imports of subject goods from subject countries/territory and the domestic industry continued to suffer injury on account of dumping by the subject countries. It was also claimed that the anti-dumping duty was not sufficient to provide due relief to the domestic industry and cessation of anti-dumping duty would result in intensified injury to the domestic industry. The Designated Authority issued a public notice No. 15/6/2006(SSR)-DGAD dated 6.3.2007, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping (Sunset Review) investigations, to examine whether the expiry of anti dumping duty would lead to continuation or recurrence of dumping, injury or both.

B. PROCEDURE

4. In these proceedings the procedure described below has been followed:
- i) After initiation of the review the Authority sent questionnaires, alongwith the initiation notification, to the known exporters/producers in the subject country/territory in accordance with the Rule 6(4), to elicit relevant information.
 - ii) Notices were also sent to the domestic industry in India seeking relevant information in accordance with the Rules;
 - iii) The Delegation of the European Commission in New Delhi was informed about the initiation of the investigation, in accordance with Rule 6(2), with a request to advise the exporters/producers in their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time.
 - iv) Questionnaires were sent to the known importers and consumers of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4),
 - v) Transaction-wise data of imports for the period of investigation and preceding three years were called from Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) and have been relied upon in this investigation;
 - vi) Copies of the initiation notification were also sent to FICCI, CII and ASSOCHAM for wider circulation.
 - vii) No exporter/producer and importer responded to the questionnaires.
 - viii) M/s. Deepak Nitrite Ltd, Vadodara and M/s.Punjab Chemicals & crop Protection Ltd, Chandigarh, being domestic industry, submitted the information/data;
 - ix) The Authority verified the information furnished by the domestic industry to the extent possible on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) to examine the injury suffered, to work out optimum cost of production, cost to make and sell the subject goods in India and so as to ascertain if Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry;
 - x) The Authority held a public hearing on 16th October,2007 to hear the interested parties orally, which was attended by representatives of the domestic industry. The written submissions received from interested parties have been considered by Designated Authority in this findings;
 - xi) The Authority made available the public file as per Rule 6(7) to all interested parties containing non-confidential version of all evidence submitted by various interested parties for inspection, upon request.
 - xii) The views expressed by various interested parties in response to the initiation notification and subsequent to the public hearing are discussed in the relevant paragraphs to the extent these are relevant as per rules and have a bearing upon the case. The arguments raised by the interested parties have been examined, considered and, wherever appropriate, dealt in relevant paragraphs.
 - xiii) Investigations were carried out for the period of investigation (POI) from 1st October, 2005 to 30th September, 2006 However injury analysis have been carried out for the years 2003-04, 2004-05, 2005-06 and the period of investigation.

B.1 PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

5. The product involved in the original investigation was Sodium Nitrite in all form. This being a Sunset review, therefore, the investigation covers the product covered in the original investigation.

6. Sodium Nitrite is an oxidizing and reducing agent. It is a white crystalline powder mostly used in Pharmaceuticals industries for production of Paracetamol, Analgin, Theophylline, Caffeine, Dye industries, Lubricants, Construction chemicals, Rubber blowing agent, Heat transfer salts, meat processing, Textiles, etc.

7. The product is classified under Customs Tariff heading 28.34.10 of the Customs Tariff Act as per Indian Trade Classification. The Customs and ITC HS classification is, however, indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation.

8. The domestic industry also produces Sodium Nitrite having similar characteristics and specifications. No argument has been extended, by any interested party, on the issue of product under consideration or like article and therefore, the Authority holds that the product being manufactured by the domestic industry and the product being manufactured and exported from the subject country is like article as per 2(d) of Anti Dumping Rules.

C. DOMESTIC INDUSTRY

9. In the original investigation the application for anti-dumping investigation was filed by M/s. Deepak Nitrite Ltd., Vadodara on behalf of the domestic industry. In the present sunset review the information/data has been provided by M/s. Deepak Nitrite Ltd, Vadodara and M/s. Punjab Chemicals & Crop Protection Ltd, Chandigarh.

C.1 INITIATION OF THE REVIEW AND ARGUMENTS RAISED

Views of Applicant Domestic Industry

10. Domestic industry has submitted that despite anti-dumping duty on Sodium Nitrite, Producers/exporters from European Union have continued dumping subject goods in the Indian market. Present investigation is a review investigation and the Designated Authority is required to examine whether revocation of duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping. In this case, as there are continued dumped imports, Designated Authority is required to examine whether revocation of duty is likely to lead to continued dumping of the product. Exporters and producers from the subject country are exporting subject products to India for the past several years. Continued exports even after imposition of duty at significantly dumping levels clearly shows that the export volumes would at best increase after revocation of duty. There is no reason to believe that exports would decline or the export price would increase after revocation of duty.

Examination by the Authority

11. The Authority takes note of arguments raised by the domestic industry regarding continued injury to the domestic industry. These arguments have been taken into account while analyzing the injury to the domestic industry, likelihood of recurrence of dumping and injury to the domestic industry.

D. METHODOLOGY FOR CALCULATION OF DUMPING MARGIN

Dumping Determination: Normal Value, Export Price and Dumping Margin

D.1 Submission made by domestic industry

Domestic industry has made the following submissions:-

12. Petitioner submitted that normal value in European Union imply price of Sodium Nitrite in the domestic market of European Union in ordinary course of trade. Efforts were made to get evidence of the price at which the material is being sold by the producers/traders in domestic market of the European Union. Efforts were also made to get copy of the price list of the exporters/traders, which may form reasonable, sufficient and accurate evidence of normal value in domestic market of European Union in the ordinary course of trade. However, the petitioner has not been able to get any evidence of normal value in European Union, which can constitute accurate and adequate assessment of normal value for the present purpose.

D.2 Examination by the Designated Authority

13. The Authority sent copies of the questionnaire to all the known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with Section 9A(1)(c). None of the producers/exporters from European Union have filed any response to the questionnaire to the Designated Authority. In the absence of any data, the authority relied upon the facts available as per Rule 6(8).

D.3 Methodology for calculation of dumping margin

Normal Value

14. The authority has constructed the normal value by considering the raw material norms as per standard input output norms (SION) and raw material prices of Caustic Soda as per prevailing prices in Europe as published in internationally followed and widely circulated magazine ICSLOR, Ammonia prices are taken as per international price as per DGCI&S published data, for manufacture of Sodium Nitrite. Based on above information available, the normal value has been calculated USD *** per MT. by considering the average exchange rate during POI of 1USD=Rs.45.57/-

Export Price

15. The export price has been determined on the basis of transaction-wise details provided by DGCI&S. During POI the CIF value of weighted average export price was Rs.***/MT (US\$***/MT). After making adjustments on account of inland freight, ocean freight, marine insurance, Commission, Port expenses, and Bank charges, the ex-factory export price has been calculated as US\$ ***/MT (1 US\$ = Rs.45.57/- during the POI).

Dumping Margin

16. Based on the normal value and export price as determined above, the Authority determined the dumping margin as under:

Dumping Margin

Exporter/Producer	Normal Value USD/MT.	Export Price USD/MT.	Dumping Margin USD/MT.	Dumping Margin %
All exporters from European Union	***	***	***	60.70%

The dumping margin determined is significant and above de minimis.

E. METHODOLOGY FOR INJURY DETERMINATION AND EXAMINATION OF CAUSAL LINK

INJURY DETERMINATION

CONTINUATION OF INJURY

Views of the Domestic Industry

17. Performance of the domestic industry improved in terms of a number of parameters in 2003-04 with low volume import volumes. Performance however deteriorated once again with the increase in import volumes in 2004-05, 2005-06 and POI. Deterioration in performance with increasing imports clearly suggests that the changes in the performance of the domestic industry are due to dumped imports. Further the landed value from the subject country have been below the net sales realization of the domestic industry. The imports continued to cause price undercutting. Resultantly, the volume and market share of imports increased. As a direct consequence, market share of the domestic industry declined. Increase in imports and market share and consequent prices offered by the domestic industry directly resulted in further deterioration of profit/loss situation, ROI and cash flow.

suggests that the situation of the domestic industry would remain adverse in the situation of continued subject imports. Further the final findings notified by the Designated Authority in the matter of sunset review investigations against China that the domestic industry suffered injury in 2003-04 and performance of the domestic industry severely deteriorated between 2003-04 and 2006-07. Thus, it may be concluded that whereas the domestic industry was already suffering injury, its injury got aggravated due to dumping from Europe. Performance of the domestic industry further deteriorated in terms of production, capacity utilization, market share, prices, profit/loss, return on investment, cash flow and growth. Evidently, situation of the domestic industry continued to remain adverse. Further, the performance would at best deteriorate further, should the anti dumping duty in force be revoked at this stage.

Examination by the Authority

18. The Authority has taken note of various arguments raised in regard to injury to the domestic industry. The Authority also notes that anti-dumping duty is in force against European Union . In its final determination in respect of EU, the Authority has determined that imports from subject country was at dumped prices. Therefore, for the purpose of injury and causal link analysis, the imports from subject country has been treated as dumped imports.

19. Article 3.1 of the ADA and Annexure II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products, with regard to the volume effect of the dumped imports. The authorities are required to examine whether there has been a significant increase in imports, either in absolute term or relative to production or consumption in the importing member. With regard to the price effect of the dumped imports, the authorities are required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in the importing country, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree, or prevent price increase, which would have otherwise occurred to a significant degree.

20. For the purpose of injury analysis the Authority has examined the volume and price effects of dumped imports of the subject goods on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal links between the dumping and injury, if any.

(A) VOLUME EFFECT: Volume effect of dumped imports and impact on domestic industry:

21. The effects of volume of dumped imports from subject country has been examined as follows:

i) **Import volumes and share of the subject country:**

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Market share					

In Imports						
EU	MT	798	2,706	3,458	2668	
Trend	Indexed	100	339	433	334	
China(Country attracting duty)	MT	2785	2,519	5,138	6065	
Other Countries	MT	1964	699	358	0	
Total Imports	MT	5547	5,924	8,954	8733	
Trend	Indexed	100	107	161	157	
Market share in Imports						
EU	%	14.39	45.69	38.62	30.55	
China(Country attracting duty)	%	50.21	42.51	57.38	69.45	
Other Countries	%	35.40	11.80	4.00	0.00	

22. The DGCI&S has provided transaction-wise data on imports. The same has been relied upon for analysis. The data shows that the total imports has increased from 5547 MT in 2003-04 (base year) to 8733 MT during October 2005 to September 2006 (POI). It has also been noted that imports from subject country has increased by 224% from the base year in absolute terms. Share of subject country in total imports, which was only 14.39% in the base year has gone up to 30.55% during POI.

23. The Authority also notes that the imports from China PR (country already attracting anti-dumping duty) has also increased from 2785 MT to 6065 MT i.e. 118% during POI as compared to base year. The share of China PR has increased from 50.21% to 69.45%. The share of other countries which was significant at 35.40% has become nil during POI. The data indicates that the subject country and China PR have increased their share in imports.

ii) Demand, Production and Market Shares

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Demand	MT	29994	30,806	33,808	33,225
Trend	Indexed	100	103	113	111
Domestic Industry	MT	20,557	20,711	20,936	20,804
Captive Consumption of DI	MT	1,078	1,358	1,105	876
Sales of other producer including captive consumption	MT				
		2,813	2,813	2,813	2,813
Total Imports	MT	5547	5,924	8,954	8,733
Market Share in demand					
Domestic Industry (merchant sales)	%	68.54	67.23	61.93	62.61
Captive consumption	%	3.59	4.41	3.27	2.64
Other Indian Producers	%	9.38	9.13	8.32	8.46
Imports from EU	%	2.66	8.79	10.23	8.03

Imports from China	%	9.29	8.18	15.20	18.26
Imports from other countries	%	6.55	2.27	1.06	0.00

24. The demand of the subject goods has been calculated by addition of domestic sales of all producers, captive consumption and all imports from all countries. The sales of other producers have been taken as estimate provided by the domestic industry. The above data indicates that the demand grew by 11% during POI as compared to base year. The market share in demand of the domestic industry has declined from 68.54% in base year to 62.61% during POI. It has also been noted that the share of the captive consumption has declined from 3.59% to 2.64% during the same period.

25. The demand of subject goods has been assessed as 33225 MT during POI, it has increased by 3231 MT during POI as compared to base year, however, the capacity of the domestic industry has not grown during the same period. It continued as 23500 MT during these years. During POI, the production was 23369 MT at 100% capacity utilization indicating gap in demand and supply within the country.

26. The share in demand of the subject country increased from 2.66% in base year to 8.03% in POI. During the same period, the share of imports from China PR (the country already attracting anti-dumping duty) also increased from 9.29% to 18.26%.

a) Capacity, Capacity Utilisation and Production of the Domestic Industry

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Capacity	MT	23500	23500	23500	23500
Capacity Utilization	%	102	105	105	100
Trends	Indexed	100	103	103	98
Production	MT	23,928	24,584	24,564	23,369
Trend	Indexed	100	103	103	98

27. The data shows that the capacity of the domestic industry remained same over the injury period. It remained at 23500 MT (for Sodium Nitrite only) during the entire period. It, however, also shows that the domestic industry can produce the goods above the stated installed capacity. The production was 5% higher than the stated capacity in 2004-05, the production, however, declined in 2005-06 and POI. It has also been noted that capacity of the domestic industry remained fully utilized during the injury period. The increase and decline in production indicates some linkage with the increase and decline in exports and captive consumption.

b) Sales of Domestic Industry

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Sales - Domestic	MT	20,557	20,711	20,936	20,804
Trend	Indexed	100	101	102	101
Sales - Exports	MT	2,246	2,769	1,553	1,672
Total Sales	MT	22,803	23,479	22,494	22,475
Captive Consumption	MT		1,358	1,105	876
Sales including captive	MT		24,838	23,599	23,351
Trends	indexed	100	104	99	98

28. The data shows that the domestic merchant sales has not shown much fluctuation during the entire injury period. It fluctuated within the range of plus-minus 1%. From the base year to POI, the sales increased by 1% i.e. by 247 MT. The exports sales shows declining trend. It declined from 2246 MT in the base year to 1672 MT in POI i.e. by 574 MT. Similarly, the captive consumption also shows declining trend. It declined from 1078 MT in base year to 876 MT during POI i.e. by 202 MT.

29. The average inventory of the domestic industry shows rising trend. It increased by 356 MT in 2005-06 as compared to 2004-05 and declined by 66 MT during POI as compared to immediate preceding year. The average inventory measured as number of sales days shows that it increased to 12 days in POI as compared to 8 days in base year.

(B) Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

30. The impact on the prices of the domestic industry on account of dumped imports from the subject country has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis the weighted average cost of production, weighted average Net Sales Realisation (NSR) and the Non-Injurious Price (NIP) of the domestic industry (worked out on the basis of the costing information of the domestic industry) have been compared with landed value of imports from the subject country.

Price Undercutting

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Export Price	Rs./MT	14,030	13,890	15,336	16,584
Landed Value	Rs./MT	17,604	16,695	17,659	18,678
Net Sales Realisation	Rs./MT	***	***	***	***
Cost of Production	Rs./MT	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs./MT	***	***	***	***
Price Undercutting (Range)	%				5 to 10

Price Underselling

(Value in Rs./MT)

Net Sales Realisation	***
Non Injurious Price	***
Landed Value	18,678
Price Underselling	***
Price Underselling (%)	***
Price Underselling range	35-40%

31. A comparison for subject goods during the period of investigation was made between the weighted average landed value of dumped imports and the domestic selling price in the domestic market. In determining the net sales realization of the domestic industry, taxes, the rebates, discounts and commission offered by the domestic industry have been adjusted.

32. The export price from the subject country has shown rising trend. The export price has increased by Rs.2554 PMT in POI as compared to base year. During the same period, the customs duty declined from 25% in base year to 12.5% in POI, consequently, the landed value of the subject goods increased by Rs.1105 PMT in POI as compared to base year. During this period, the net selling price of the domestic industry declined by 5%. The undercutting of the selling price of the domestic industry by the imports (without anti-dumping duty) from subject country continued during the entire injury period though it declined in POI as compared to base year. The undercutting was in the range of 5 to 10% during the POI. The Authority also notes that undercutting by imports (with anti-dumping duty) from subject country was negative during POI.

33. The data on cost of production shows that cost of production has been rising from base year to POI. It increased by 15% during POI as compared to base year. The data on selling price shows that selling price has been declining from base year to POI. In POI when the cost of production increased by 15% selling price declined by 5% as compared to base year, resulting to increase in losses and indicating that the prices remained suppressed.

34. The price underselling is an important indicator of assessment of injury; thus, the Authority has worked out a non injurious price and compared the same with the landed value to arrive at the extent of price underselling. The non-injurious price has been evaluated for the domestic producer by appropriately considering the cost of production for the product under consideration during the POI. The analysis shows that the weighted average landed value of the subject goods from subject countries is less than the non injurious price determined for the domestic industry during the period of investigation. The underselling was in the range of 35-40% during the POI.

Examination of other Injury Parameters

35. After having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry and major injury indicators like volume and value of imports, capacity, output, capacity utilization and sales of the domestic industry as well as demand pattern with market shares of various segments in the earlier

section, other economic parameters which could indicate existence of injury to the domestic industry have been analysed hereunder as follows:

(i) Profits and Actual and Potential Effects on Cash Flow

(Merchant sale)					
Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Profitability					
Cost of sales weighted	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	103	113	115
Selling Price	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	93	98	95
Profit/ Loss	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	(100)	(2,736)	(3,919)	(5,281)
Total Profit/ Loss-Domestic	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	(100)	(2,757)	(3,991)	(5,345)
PBIT	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	(180)	(272)	(448)
Cash Profit	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trends	Indexed	100	(253)	(384)	(552)

36. The profitability of the merchant sales of the domestic industry has been analyzed from the records of the company:

37. The cost of production from base year increased by 3% in 2004-05, 13% in 2005-06 and 15% during POI. The net selling price from base year declined by 7% in 2004-05, 2% in 2005-06 and 5% during POI. Loss of the domestic industry has gone up in the POI. Industry was in cash profit in base year has turned of to cash loss in POI.

(ii) Employment and Wages

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Employment					
Employee	Nos.	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	98	95	100
Wages paid to employees	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	150	137	127

38. The companies of the domestic industry are multi-product companies. It was not possible to segregate the number of employees for the subject goods, therefore, the employees of the companies as a whole have been used for analysis. Data shows that the Number of employees did not change in POI as compared to base year, however, the wages paid to employees increased by 27% during the same period.

(iii) Productivity

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Productivity					
Production	MT	***	***	***	***
Productivity per Day	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	103	103	98

39. The production per day declined to 98% during POI as compared to base year.

(iv) Inventories

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Average inventories	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	78	153	139
No. of days sales	Days	8	7	13	12

40. The average inventory of the domestic industry shows rising trend. It has increased by 39% in POI as compared to base year. It increased by 356 MT in 2005-06 as compared to 2004-05 and declined by 66 MT during POI as compared to immediate preceding year. The average inventory measured as number of sales days shows that it increased to 12 days in POI as compared to 8 days in base year.

(v) Return on Investment and Ability to Raise Capital

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
NFA	Rs. lacs	***	***	***	***
Working Capital	Rs. lacs	***	***	***	***
Capital Employed-NFA Basis	Rs. Lacs	***	***	***	***
Return on Capital Employed	%	***	***	***	***
Trends	Indexed	100	(168)	(190)	(303)

41. The capital employed during POI has increased by 51% both on account of net fixed assets and working capital. During the year 2005-06, domestic industry incurred capital expenditure for replacing certain items of plant and machinery with new ones without any capacity additions. Return on capital employed which was positive in the base year has become negative in 2004-05 and continued as negative thereafter. This shows a significant deterioration in the profitability on a continuing basis.

vi) Profits and actual and potential effects on the cash flow

42. The domestic industry is a multi-product company therefore it was not possible to determine the actual magnitude of cash-flow of the product.

vii) Factor affecting prices

43. Evaluation of export prices from subject country shows that it had been increasing from base year to POI by 18%. The customs duty has, however, been declining from base year to POI. From 25% in 2003-04 it declined to 12.5% during POI. Consequently, the landed value of the subject goods increased by 6% from base year to POI. The cost of sales of the domestic industry in the same period, however, increased by 15%.

CONCLUSION ON INJURY

44. The demand of subject goods grew by 13%, 11% in 2005-06 and POI respectively as compared to 2003-04 (base year). The capacity of the domestic industry, however, continued to be same during the entire injury period. The merchant sales of the domestic industry also continued to be at the same level with minor fluctuation of plus-minus 1%. The export sales and captive consumption shows declining trend during the entire injury period. The decline in production coincides with the decline in export sales and captive consumption. The average inventory, however, shows piling of stock and increased during POI by stock equivalent to 4 days of sales. The capacity utilization of the domestic industry continued to be fully utilized during the entire injury period.

45. As compared to base year, the cost of sales increased by 3% in 2004-05, 13% in 2005-06 and 15% in POI. The selling price, however, declined to 93% in 2004-05, 98% in 2005-06 and 95% in POI. The profitability (profit/loss per MT) shows deterioration from 2003-04 onwards because of rising cost of sales and declining selling prices. Profits (PBIT) and cash profits shows similar trend of deterioration. The return on capital employed follows similar trend and continues to deteriorate.

46. The above analysis shows that the domestic industry though fully utilized its capacity, however, it continued to make losses indicating continuing injury to the domestic industry.

OTHERS KNOWN FACTORS

Volume and prices of imports from other sources

47. It has been seen that imports from China PR (country already attracting anti-dumping duty) had been completing with the imports from subject country. The imports from China PR has increased from 2785 MT in base year to 6065 MT in POI. The imports from other countries continued to decline from base year to POI. It was 2362 MT in base year, declined to 699 MT in 2004-05, 358 and .03 MT in POI, therefore, imports from other countries other than China PR cannot be reason for injury to the domestic industry.

Contraction in demand and / or change in pattern of consumption

48. Demand of the product under consideration has not registered any negative growth. Contraction in demand is not a possible reason, which could have contributed to injury to the domestic industry.

Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

49. The subject goods are freely importable and there are no trade restrictive practices in the domestic market. Therefore, this factor could not have been reason to cause injury to the domestic industry

Development of technology and export performance

50. Technology for production of the product has not undergone any change. Developments in technology is not a factor of injury. The domestic industry have some export activity, however, exports show declining trend and the volume during POI declined by 574 MT during POI as compared to base year.

Productivity of the Domestic Industry

51. Productivity of the domestic industry measured as production per day has shown that productivity has not changed during the entire injury period.

CAUSAL LINK

52. In view of the gap in supply and demand, the imports had been taking place. In rising demand the market share of domestic industry was bound to decline. Therefore, the rising imports cannot be reason for decline of market share of the domestic industry particularly when the domestic industry continued to utilize its capacity fully.

53. However, despite full utilization of its capacity, the domestic industry continued to suffer losses primarily because of its failure to increase the selling price despite rising cost of the production. The net selling price of the domestic industry shows similar trend as that of lowest landed value (the landed value with anti-dumping duty) except during POI when net selling price has not increased with the rise in landed value. The trend indicates that the selling price of the domestic industry was impacted by landed value of imports.

54. The dumping of subject goods have been taking place from two sources, i.e. European Union and China PR. The imports from two sources indicate competition. The rise and decline of imports from each source clearly indicate linkage with the fluctuation in their export prices. From EU, with decline in prices in 2004-05, the imports volume increased. (During 2004-05, the export price from China increased and imports volume declined.) In 2005-06, though the prices from EU increased, volume also increased, however, from China PR export price increased marginally and volume also increased. In POI, prices increased from EU and volume declined but from China PR prices declined and volume increased.

55. In view of the above, the Authority notes that decline in the performance of domestic industry and injury is attributable to dumped imports from European Union (and China PR).

LIKELIHOOD OF CONTINUANCE OF DUMPING

56. The Authority notes that in the original investigation concluded on 28.10.2002, the exporter (M/s BASF AKTIENGENSELLSCHAFT) from Germany had not cooperated with the Authority and have opined that "it is evident that due to the 41.3% regular duty there has to be dumping". In the present review, no exporter from European Union has cooperated and provided any information. The Authority further notes that anti-dumping duty have been imposed by US concerning imports of sodium Nitrite from European Union (Investigation Nos. 701-TA-453 and 731-TA-1136-1137 (Preliminary)). The domestic industry has pointed out that with the imposition of anti-dumping duty by US, the exporters from EU are likely to dump the goods in India in case duty is withdrawn.

57. In absence of any response from exporters of the European Union and positive determination of dumping margin in the earlier section of this findings, there is no material on the record, circumstances and reason to believe that after withdrawal of duty, dumping from the European Union would discontinue.

LIKELIHOOD OF CONTINUANCE OF INJURY

58. As analysed in the earlier section, the domestic industry continued to suffer injury because of decline in selling prices despite rising cost of production. It has also been noticed that during POI there was marginal negative undercutting of selling price of the domestic industry by imports from European Union. It has also been noticed that the selling price of the domestic industry followed trends of the lower landed value of dumped imports from different sources. In case, the duty is withdrawn, the landed value will become further lower by current amount of the anti-dumping duty and undercutting would be positive. This in turn would put pressure on the selling price of the domestic industry. The domestic industry is already suffering losses and decline in the selling price would result in further deterioration of the performance of the domestic industry. The Authority, therefore, holds that with the withdrawal of anti-dumping duty, the injury to the domestic industry may intensify.

I. FINAL FINDINGS

59. The Authority after considering the foregoing concludes that:

- a. Subject goods originating in or exported from subject countries/territory have been exported to India below their normal value, resulting in dumping;
- b. The domestic industry has suffered material injury due to dumped imports;
- c. And discontinuation of anti-dumping duties on the subject goods from subject countries/territory may result in continuance of dumping and continuance or intensification of injury to the domestic industry.

J. Indian industry's interest & other issues

60. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the product in India. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from subject countries/territory in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply

61. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries/territory in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

K. Recommendations

62. In view of positive determination of likelihood of dumping and injury on account of imports from subject countries/territory the Authority is of the opinion that continuation of the measure is required against imports from subject countries/territory. However, considering the current level of dumping from subject countries/territory and injury suffered by the domestic industry, the Authority is of the opinion that the measure in force needs to be revised. Therefore, Authority considers it necessary and recommends anti-dumping duty on imports of subject goods from subject countries/territory in the form and manner described hereunder.

63. Having regard to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority recommends continued imposition of definitive anti-dumping duty on imports of the subject goods originating in or exported from European Union, equal to lower of margin of dumping and the margin of injury, so as to offset dumping and remove the injury to the domestic industry. The Authority in this case considers it appropriate to impose the anti-dumping duty on reference price basis and accordingly, recommends imposition of definitive antidumping duty as difference between amount indicated in Col. 8 of the table below and the landed value, to be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all imports of subject goods originating in or exported from European Union.

Sl. No.	Tariff Item	Description of Goods	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount	Unit of Measu- rement	Currency
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	2834.2901	Sodium Nitrite	European Union	European Union	Any	Any	25235	MT	Rs.
2.	-do-	Sodium Nitrite	European Union	Any other than European Union	Any	Any	25235	MT	Rs.
3.	-do-	Sodium Nitrite	Any other than subject country	European Union	Any	Any	25235	MT	Rs.

64. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

65. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

R. GOPALAN, Designated Authority